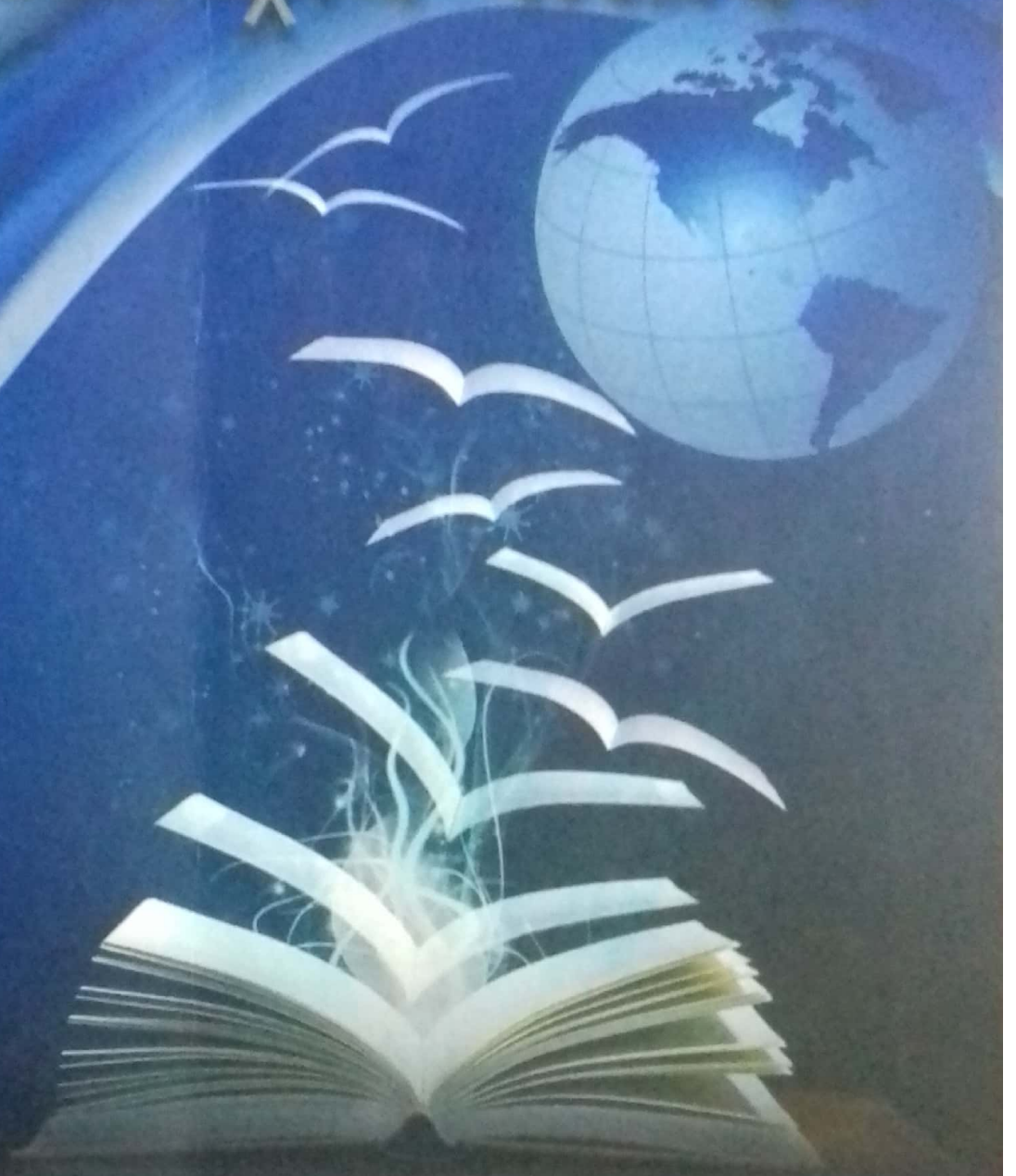


ISBN : 978-93-83813-31-5

भारतीय साहित्य का अंतरराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य



प्रधान संपादक

• डॉ. एस. टी. मेरवाडे • डॉ. एस. एस. तेरदाल

सह संपादक

• डॉ. एस. जे. पवार • डॉ. एस. जे. जहागीरदार

BHARATIYA SAHITYA KA ANTARARASHTRIYA PARIPREKSHYA :

ISBN 978-93-83813-31-5

Publisher : Soumya Prakashan
Kabeer Kunj, Mahabaleshwar Colony
Vijayapur - 586 103

© Publisher

First Edition : 2018

Copies : 1000

Pages : xii + 448 = 460

Price : Rs. 300/-

Book Size : Demy 1/8

Paper Used : 70 G.S.M. N. S. Maplitho

भारतीय साहित्य का अंतरराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य

प्रधान संपादक : डॉ. एस. टी. मेरवाडे, डॉ. एस. एस. तेरदाल

सह संपादक : डॉ. एस. जे. पवार, डॉ. एस. जे. जहागीरदार

ISBN 978-93-83813-31-5

प्रकाशन : सौम्य प्रकाशन
'कंबीर कुंज', महाबलेश्वर कॉलनी,
विजयपुर - 586 103 (कर्नाटक)

प्रथम मुद्रण : 2018

© प्रकाशक

प्रति : 1000

पृष्ठ : xii + 448 = 460

मूल्य : रु. 300/-

बुक साईज : डेमी 1/8

पेपर : 70 जी.एस.एम. एन. एस. म्यापलिथो

मुद्रक :

त्वरित मुद्रण आफसेट प्रिन्टर्स

विट्ठल मंदिर रोड, गदग - 582 101

Email : chaitanyaoffset@gmail.com

Mobile : 8884495331, 9448223602

70. मायानन्द मिश्र के 'प्रतमं शौल पुत्रीच' उपन्यास में ऐतिहासिकता
● सावित्री य. गजाकोश 341
71. हिंदी पत्रकारिता का बाल साहित्य के लिए योगदान
● डॉ. शीला चौगुले 347
72. नासिरा शर्मा जी की कहानियों में अल्पसंख्यक विमर्श
● शेख परवीन बेगम इब्राहीम 353
73. अंतर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में लिखे गए उपन्यासों में चित्रित स्त्री समस्याएँ
● डॉ. राजेन्द्र पावार 361
74. वर्तिका नन्दा के 'थी. हूँ...रहूँगी..' में चित्रित राजनैतिक संदर्भ
● प्रा. विश्वनाथ मुजावर 366
75. वर्तिका नन्दा की कविता में स्त्री संवेदना
● डॉ. नीता श्रीकांत दौलतकर 371
76. गिरिराज किशोर के दो प्रमुख उपन्यासों में दलित चेतना
● डॉ. आरती वर्मा 376
77. डॉ. बालशौरी रेड्डी के जिंदगी की राह में नारी चित्रण
● गंगाधर गेंड 380
78. 'बीस रुपए' : अभिशप्त जीवन का कटु यथार्थ
● डॉ. रवीन्द्र एम. अमीन 384
79. हिंदी भाषा : स्थिति गति
● सुनीलकुमार यादव 392
80. उषा प्रियवंदा के साहित्य में स्त्री विमर्श
● प्रो. विद्या एस. हिरेमठ 398
81. अनुवाद: विश्व से जुड़ने का सशक्त मध्यम
● राहुल लक्ष्मण कासार 401
82. भूमंडलीकरण और हिन्दी साहित्य
● डॉ. एम. सिद्दय्या 406

डॉ. बालशौरी रेड्डी के जिंदगी की राह में नारी चित्रण

• गंगाधर गैड

भूतकाल से आज तक हमारा देश नारी को देवता मानकर पुजते आया है। नारी अपने उच्चतम गुणों के कारण देवता कहीं जाती है। वेदकाल की स्वतंत्रता मध्ययुग की मूर्धनता, आधुनिक युग की दांव-पेंच में नारी अपनी विशिष्टता नहीं खोई है। और उनकी वह विशिष्टता उसके संयम में है। नारी चाहे कुलिन हो या कुटील, आदर्श हो या आतंककारी उन सभी में समान रूप से एक ही गुण विद्यमान है। वह है उसका संयम इसलिए वह सराहनीय है।

पुरुष का जीवनारंभ केवल नारी पर निर्भर होता है। वह नारी माता कहलाती है। जो अपनी संतान को नौ माह तक अपन कोख में धारण करती है। अतीववेदना सहकर भी वह अपने बच्चे को जन्म देती है। उसे चलने फिरने के काबिल बनाती है। खाना खिलाना संस्कार सबकुछ सिखाकर इस दुनिया में जिने लायक बनात है। फिर पुरुष के जीवन में नारी अनेक रूपों में प्रवेश करती है। बहन बनकर, प्रेयसी बनकर, पत्नी बनकर और बेटी बनकर। यह तो तय है कि पुरुष के बिना नारी का जीवन अधुरा है। तो नारी के बिना पुरुष का जीवन भी उतनी ही मात्रा में अधुरा है। इसलिए नारी शब्द अपने आप में विशिष्ट है। सूक्ष्म दृष्टि से नारी के असंख्य रूप हो सकते हैं। मात्र स्थूल रूपों में उसे दो भागों में बाटा गया है। एक वह अपने दायरे में रहकर स्वतंत्र का अनुभोग करती, त्याग, प्रेम, सहनशीलता जैसे आदर्श गुणों के स्वामिनी नारी या फिर अपनी सीमाओं को लांघकर विपत्ति को मोड लेनेवाली नारी के रूप में।

इस विषय में डॉ. रेड्डी जी कहते हैं-“मैं नारी को दो रूपों में देखता हूँ । एक श्रद्धामयी देवी के रूप में और दूसरे लावण्यमयी कामिनी के रूप में ।”

इनके अनेक उपन्यासों में नारी के विविध रूपों को देखने को मिलता है। वह कहीं शोषित, पीडित के रूप में तो कहीं बंदी के रूप में दिखती है । उनके ‘शबरी’ उपन्यास की शबरी शौर्य और शहस के साथ सदाचार और त्याग का परिचय देती है तो ‘जिंदगी की राह’ में ‘सुहासिनी’ भारतीय आदर्श को पुष्टि देनेवाली है । वह सदैव समर्पित जीवन जीती है । ‘भग्न सीमाएँ’ उपन्यास में सरोज अपने व्यक्तिगत आदर्श गुणों के कारण श्रद्धामयी देवी बन जाती है । इस प्रकार विविध उपन्यासों में नारी की विविधता को दर्शाने में डॉ. बालशौरि रेड्डी सफल हुए हैं । विशेष रूप से ‘जिंदगी की राह’ उपन्यास में सुहासिनी का चित्रण एक अनोखी नारी का चित्रण बनकर उभर आया है ।

जिंदगी की राह :

‘जिंदगी की राह’ उपन्यास की सुहासिनी का पात्र भारतीय आदर्श को पुष्टि देनेवाला पात्र है । सुहासिनी का जीवन त्याग और सेवा का रही । वह सदा एक समर्पित जीवन जीती रही । माता-पिता की मृत्यु के बाद परिवार की सारी जिम्मेदारी सुहासिनी पर आ गई । वह अपनी बहन सरला को डॉक्टरी पढ़ने मद्रास भेजती है । सुहासिनी की बहन से बहुत प्यार करती है । इसलिए बचपन में एक बार सरला की गलती पर पिताजी से खुद मार खाई थी । सुहासिनी में भारतीय नारी के सभी आदर्श गुण विद्यमान हैं । वह हमेशा सरल ममता से पेश आती है । लेकिन जब उसे पता चलता है कि उसकी बहन पढाई छोडकर किसी पराये पुरुष के प्रेमजाल में फंस गई है तो वह आग बबूला बन जाती है । और दौडते हुए बहन को समझाती है । उसे वापिस सही रास्ते पर लाने की चेष्टा भी करती है ।

सुहासिनी की फूफी का बेटा राजाराम व्यापार में नष्ट कर देता है । इस कारण सुहासिनी जीवन निर्वाह के लिए ट्यूशन पढाना शुरू कर देती है । “सुहासिनी आज तक कभी अकेली बाहर नहीं निकली थी यदि कभी किसीी जरूरी काम कर निकलती तो कार ही में । आज कल अकेली रिक्षे पर बैठे ट्यूशन करने जाते देख उस गली की आँख करूणावश बरस पडतीं । बडे वृध्द

और पुरुष भी उसके परिवार का हाल देखकर चिंताकुल हो जाते हैं। इन विषय परिस्थितियों में भी सुहासिनी गंभीर ही रहती।² सुहासिनी जहाँ पढ़ने जाती थी वहाँ का डॉक्टर लपंट था। डॉक्टर की लपंटता के प्रति सुहासिनी के उद्गार ध्यातव्य हैं। “डॉक्टर आप भूल कर रहे हैं। पल भर में निर्णय कर दिल किसी को सौंपा नहीं जाता है। सच्चे प्रेम में चंचलता नहीं स्थिरता होती है। विवेक होता है और होती है आत्म समर्पण की भावना।”

सुहासिनी का विवाह भी एक परिस्थिति जन्य अनवार्थता है। उसका फूफी का बेटा राजाराम से होता है। विवाह के समय में उसकी बहन सरला नहीं आती उसकी अपनी मजबूरी थी। वह प्रेम में धोखा खा कर गर्भवती हो गई थी। लेकिन सुहासिनी को यह सब पता नहीं था। वह अपनी शादी में बहन की अनुपस्थिति को देखकर चटपटाती है। “मंगलसूत्र बांधा जा रहा था। शहनाईयों की मधुर ध्वनि गूँज उठी। दुल्हिन सुहासिनी ने फटक की ओर देखा उसके खुलने की आवाज न सुन उसकी आँखों से दो बड़ी-बड़ी गरम आँसुओं की बुँदे गिरी। इस शुभ घड़ी में शोक ? आनंद के साथ यह शोक भी अपना नाता जोड़े मानव को जगत के किसी चिरंतन सत्य का बोध करा अष जैसे।”

नारी अपने समस्त देवी गुणों के कारण पूजनीय बनती है। अपने बुरे गुण अपने स्वार्थपरता के कारण निंदा के लायक बन जाती है। इस प्रकार स्वार्थ को सर्वोपरि मानकर सत्यानाश की ओर बढ़ने वाली नारी पात्रों में सरला प्रमुख पात्र है। इस उपन्यास में सरला मेडिकल कॉलेज में पढ़ती थी वह सोमनाथ की पुत्री थी। विमान दुर्घटना में सोमनाथ की मृत्यु के कारण सरला की बड़ी बहन सुहासिनी ने ही सरला को पढ़ाने के लिए भेजा। सरला का मेडिकल कालेज में एक सुरेख नाम के युवक से प्रेम हो गया और वह उस प्रेम में पूर्णतः डूब गई। जब बहन सुहासिनी और फूफी को इस बात का पता चलता है, तो वे दोनों सरला को समझाने की ओर उसे फिर से सही रास्ते पर लाने की कोशिश करती हैं। मगर सरला को प्यार पर पूरा विश्वास है।

इसलिए वह अपनी बहन और फूफी का कहा न मानकर मनमानी कर बैठती है। सरला और सुरेश का प्यार बढ़ता ही गया। सरला अपनी पार करके गलती कर बैठी। इस अपराध का परिणाम स्वरूप उसमें बीज अंकुर हो गया

और वह गर्भवती हुई। अब उसको अपने कारनामों पर पछतावा होने लगी। लेकिन वहाँ की औरतों के अनेक प्रकार के प्रश्नों का उत्तर वह दे नहीं पाती थी। “मानव क्षणीक सुख के लोभ में पड़कर जो भूल का बैठता है। उसका परिणाम इतना भयंकर होता है कि इसकी कल्पना तक सरला ने कभी नहीं की थी। वह प्रेम के उन्माद में अपने पर नियंत्रण खो चुकी थी। उसे नहीं मालूम था कि यह तूफान कुछ ही दिनों में थम जाएगा और उसे बड़ी भारी श्रत पहुँचाएगा।” सुरेश चाहकर भी सरला से विवाह नहीं कर सका। इधर सरला अपमान न सहकर आत्महत्या की शरण ली। सरला आदि से अंत तक सत्रिय, संघर्षशील एवं जीवन मूल्यों से जूझने वाली तेजस्विनी नारी के रूप में विद्वमान रक्षी है। वह एक व्यक्तित्व और मानदंड के साथ जीती है। जब उसके जीवन में सभी द्वार बंद हो जाते हैं तो मरण भी स्वीकार करती है।

लेखक ने सरला के माध्यम से भारतीय युवती का करुणमय चित्र प्रस्तुत किया है। यथार्थ और आदर्श का सहज समन्वय सरला के चरित्र में है। वह मंगल सूत्र से प्रेम सूत्र को अधिक महत्व देती है, पर नियती ने उसका साथ न दिया। सरला के व्यक्तित्व की संपूर्णता को उसके अंतिम समय के इस पात्र द्वारा भली भाँति समझा जा सकता है।

इस उपन्यास में लेखक सरला के अंत को एक तरह से समर्थन किया है। जो समाज के नियमों का उल्लंघन करता है उसे वैसी ही परिस्थिति भुगतने मिलेगी। डॉ. बालश्री जी ने अपनी ‘जिंदगी की राह’ उपन्यास में नारी की गरीमा को ऊपर उठाया है। जहाँ कहीं बुराई है, वहाँ का कारण चाहते हैं। भारतीय नारी अपनी सहजता में अच्छी लगती है।

■ ■